"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन"

जय सिंह (शोध छात्र)

शिक्षक–प्रशिक्षण विभाग, चौ.चरण सिंह महाविद्यालय, हैंवरा, इटावा।

प्रो. फतेह बहादुर सिंह यादव (शोध निर्देशक)

प्रोफसर, शिक्षक–प्रशिक्षण विभाग, चौ.चरण सिंह महाविद्यालय, हैंवरा, इटावा।

सारांश–

पृथ्वी, वायु, जल, पशु, पेड़–पौधे, मनुष्य, कीड़े–मकोड़े आदि मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। पृथ्वी पर इन सभी की मात्रा एवं इनकी संरचना इस प्रकार व्यवस्थित है कि इस धरा पर एक संतुलित जीवन बना रहे। विगत कुछ वर्षों में जब से मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधानों के माध्यम से अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त की, सुख–सुविधाओं के साधन जुटाना शुरू किए, बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए औद्योगिक क्रान्ति की मदद लेना शुरू की, तभी से प्रकृति का सामान्य रूप असन्तुलित होने लगा। परिणामस्वरूप जीव–जन्तुओं का सामान्य जीवन प्रभावित होने लगा। प्रकृति एवं मनुष्य का संबंध आदिकाल से ही है लेकिन मनुष्य जितना उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है, उस अनुपात में पर्यावरण को संरक्षित एवं संवर्धन करने पर ध्यान नहीं दे रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी से युक्त वर्तमान युग में यह आवश्यक हो गया है कि हम बच्चों को इस प्रकार शिक्षित करें कि उनमें पर्यावरण के बारे में जागरुकता उत्पन्न हो। आज का बालक देश का भावी कर्णधार है। अतः बालकों का इस प्रकार विकास किया जाना जरूरी है कि वे आगामी पीढ़ी को स्वच्छ एवं समृद्ध पर्यावरण विरासत के रूप में दें। प्रस्तुत शोध में औरैया जिले के माध्यमिक विद्यालयों से 200 छात्रों का चयन यादृच्छिक तरीके से किया गया। आँकड़ों का एकत्रीकरण डॉ प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरुकता मापनी द्वारा किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरुकता कला वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक थी, अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरुकता निजी माध्यमिक विद्यलयों के विद्यार्थियों से अधिक थी, छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरुकता पर्यावरण संबंधी संगोष्ठी, प्रश्नमंच, वाद–विवाद प्रतियोगिता, कार्यशालाओं आदि क्रिया–कलापों द्वारा उत्पन्न की जा सकती है।

मुख्य शब्द– पर्यावरण, पर्यावरण जागरुकता, विद्यार्थी, माध्यमिक विद्यालय, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण।

प्रस्तावना–

पृथ्वी, वायु, जल, पशु, पेड़–पौधे, मनुष्य, कीड़े–मकोड़े आदि मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। पृथ्वी पर इन सभी की मात्रा एवं इनकी संरचना इस प्रकार व्यवस्थित है कि इस धरा पर एक संतुलित जीवन बना रहे। जब से इस धरा पर कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी, मानव और अन्य जीव उपभोक्ता के रूप में पैदा हुए तब से प्रकृति का ये चक्र निरन्तर गति से गतिमान है। इस पृथ्वी पर जिस जीव को जितनी आवश्यकता होती है उसे उसी अनुपात में मिलता रहता है। प्रकृति भविष्य के लिए अपने में और पैदा करके संरक्षित कर लेती है। विगत कुछ वर्षों में जब से मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधानों के माध्यम से अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त की, सुख–सुविधाओं के साधन जुटाना शुरू किए, बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए औद्योगिक क्रान्ति की मदद लेना शुरू की, तभी से प्रकृति का सामान्य रूप असन्तुलित होने लगा। आवास बनाने के लिए उपजाऊ जमीन का उपयोग होने लगा, वनों को काटकर कृषि की जाने लगी, बड़े–बड़े जंगलों को नष्ट करके बाँध बनाए जाने लगे और न जाने कितने ऐसे प्रयोग शुरू किये गए जो प्रकृति के लिए अनुकूल नहीं थे। परिणामस्वरूप जीव–जन्तुओं का सामान्य जीवन प्रभावित होने लगा। मनुष्य की इन गतिविधियों से पहले तो प्रकृतिक संसाधनों की कमी हुई एवं फिर धीरे–धीरे जल, वायु, मिट्टी आदि सभी प्राकृतिक संसाधन जोकि प्रत्येक जीव के जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं, प्रदूषित होने लगे, जो वर्तमान में चिंता का कारण बन गए हैं।

यदि हम पर्यावरण के संदर्भ में वैश्विक पटल पर पिछले कुछ वर्षों की स्थितियों का अवलोकन करें तो बहुत कुछ स्थितियाँ स्पष्ट नजर आती हैं। पर्यावरण से संबंधित विशेषज्ञों ने जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, औधोगिक क्रान्ति, पर्यावरण प्रदूषण आदि से पहले ही पूरे विश्व में उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय विषमताओं के बारे में आगाह कर दिया था एवं चेतावनी दी थी कि भविष्य में इस प्रकार गतिविधियों पर रोक नहीं लगी तो प्राकृतिक जीवन के सामने कई विकराल एवं भयंकर समस्याएँ निश्चित तौर पर आने वाली हैं।

मनुष्य एवं पर्यावरण का संबंध आदिकाल से ही रहा है। पर्यावरण एक प्रकार का घेरा है जो मनुष्य को चारों तरफ से घेरे हुए है। पर्यावरण मनुष्य को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष तरीके से प्रभावित करता है। हमारे आस–पास विद्यमान वे सभी वस्तुएँ, बाह्य परिस्थितियाँ एवं विभिन्न अवस्थाएँ जो हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं और मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक विकास पर प्रभाव डालती है, उनमें पर्यावरण सबसे प्रभावशाली कारक होता है, जो मनुष्य के स्वास्थ्य को बड़े स्तर पर प्रभावित करता है। पर्यावरण का निर्माण पृथ्वी, जल, वायु, आकाश एवं अग्नि से मिलकर हुआ है, जो ईश्वर द्वारा दिया हुआ एक अमूल्य उपहार है। ऐसा वैज्ञानिकों का भी मानना है कि यह पूरे मानव समाज का महत्त्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। पर्यावरण सृष्टि की क्रियाशीलता एवं विकासशीलता को गतिमान रखता है। इसलिए वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि पर्यावरण के सभी घटकों को शुद्ध रखा जाए।

प्रकृति एवं मनुष्य का संबंध आदिकाल से ही है लेकिन मनुष्य जितना उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है, उस अनुपात में पर्यावरण को संरक्षित एवं संवर्धन करने पर ध्यान नहीं दे रहा है। परिणामस्वरूप आज मनुष्य के सामने अनेक लाइलाज बीमारियाँ, वैश्विक तपन, भूकम्प, बाढ़, ज्वालामुखी का फटना, पर्यावरण प्रदूषण आदि भयाभह परिस्थितियाँ पैदा हो रही हैं। मनुष्य की औसत आयु घट रही है। प्रकृति में इन समस्याओं के उत्पन्न होने का जिम्मेदार मनुष्य स्वयं ही है। प्रकृति को दूषित करने का काम मनुष्य ने ही किया है। प्रकृति अपने क्रियाकलापों के द्वारा पर्यावरण को शुद्ध एवं

स्वच्छ रखने के लिए प्रयासरत् रहती है लेकिन मनुष्य की विकासात्मक कार्यशैली के फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण का जन्म होता है।

मनुष्य शुरू से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है, जिसके कारण वह हमेशा नये–नये अनुभवों से नवीन ज्ञान प्राप्त करता रहता है एवं शोधकार्य करता रहता है। इस धरा पर सभी प्रणियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है क्योंकि मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें सोचने, समझने, चिंतन करने, तर्क करने, समस्या समाधान आदि का गुण पाया जाता है। शैक्षिक शोध का उद्देश्य भी शैक्षिक क्षेत्र में नवाचार लाना होता है। समय के परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। विज्ञान एवं तकनीकी से युक्त वर्तमान युग में यह आवश्यक हो गया है कि हम बच्चों को इस प्रकार शिक्षित करें कि उनमें पर्यावरण के बारे में जागरुकता उत्पन्न हो लेकिन भौतिकवादिता के कारण वैश्विक स्तर पर पर्यावरण का तेजी से पतन होता जा रहा है।

ऐसी परिस्थिति में वर्तमान की यह माँग है कि हम पर्यावरण को संरक्षित करने का प्रयास करें। आज का बालक देश का भावी कर्णधार है। अतः बालकों का इस प्रकार विकास किया जाना जरूरी है कि वे आगामी पीढ़ी को स्वच्छ एवं समृद्ध पर्यावरण विरासत के रूप में दें।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व–

वर्तमान युवा पीढ़ी पर्यावरण संबंधी समस्याओं से अनभिज्ञ है। सभी क्षेत्रों में शामिल व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि वैयक्तिक एवं सार्वजनिक दोनों स्तरों पर पर्यावरणीय मूल्यों के मानदण्डों में कमी आयी है। आज हमारे द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग के कारण हमें स्वच्छ वायु एवं जल मिलना मुश्किल हो गया है। यदि हम आज इस दिशा में कोई कदम उठाते हैं तो उसका परिणाम आने वाले 50–60 वर्षों में प्राप्त होगा। अतः विद्यार्थियों में पर्यावरण के मूल्यों जैसे– जीव हिंसा, वृक्षों का काटना, जल संरक्षण आदि का परीक्षण करके पर्यावरणीय ह्रास के कारणों को खोजकर पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकता है। इसके द्वारा हम माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाकर पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए विकसित कर सकते हैं।

अतः उपरोक्त परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने इस शोधपत्र में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1. माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

1. माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध समस्या का सीमांकन–

प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा संचालित औरैया जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यर्थियों तक ही सीमित है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि को उपयोग में लाया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रुप में माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा संचालित औरैया जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी हैं।

शोध का न्यादर्श एवं चयन विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा संचालित औरैया जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया है। नयादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों का एकत्रीकरण डॉ प्रवीन कुमार झाा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरुकता मापनी द्वारा किया गया है।

विश्लेषण विधि–

आँकडों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन और क्रान्तिक अनुपात के आधार पर किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना संख्या –1

माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र.सं.	शोध समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि	टी मान	सार्थकता स्तर
1.	कला संकाय के विद्यार्थी	100	36.45	6.34	.8061	2.3570	.05 स्तर पर सार्थक
2.	विज्ञान संकाय के विद्यार्थी	100	38.35	4.98			

उपरोक्त तालिका के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 36.45 और 38.35 है। माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का मानक विचलन क्रमशः 6.34 एवं 4.98 है जिसमें अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि .8061 है। इस तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के परिकलित क्रान्तिक अनुपात का मान 2.357 प्राप्त हुआ जोकि 198 स्वतंत्रता अंश एवं .05 सार्थकता स्तर पर टी. सारणी के मान 1.96 से अधिक है। अतः मध्यमानों के आधार पर परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

अतः सांख्यकीय विश्लेषण के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर है। माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता कला संकाय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

परिकल्पना संख्या –2

अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र.सं.	शोध समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि	टी मान	सार्थकता स्तर
1.	अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	38.52	5.14	.8038	2.7868	.01 स्तर पर सार्थक
2.	निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	100	36.28	6.18			

उपरोक्त तालिका के अनुसार अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 38.52 और 36.28 है। अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानक विचलन क्रमशः 5.14 एवं 6.18 है जिसमें अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि .8038 है। इस तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के परिकलित क्रान्तिक अनुपात का मान 2.7868 प्राप्त हुआ जोकि 198 स्वतंत्रता अंश एवं .01 सार्थकता स्तर पर टी. सारणी के मान 2.60 से अधिक है। अतः मध्यमानों के आधार पर परिकल्पना अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

अतः सांख्यकीय विश्लेषण के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर है। अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता निजी माध्यमिक विद्यालया के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

परिकल्पना संख्या –3

माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र.सं.	शोध समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि	टी मान	सार्थकता स्तर
1.	माध्यमिक विद्यालयों के छात्र	100	36.16	6.56	.8105	3.0598	.01 स्तर पर सार्थक
2.	माध्यमिक विद्यालयों की छात्राएँ	100	38.64	4.76			

उपरोक्त तालिका के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 36.16 और 38.64 है। माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं का मानक विचलन क्रमशः 6.56 एवं 4.76 है जिसमें अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि .8105 है। इस तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के परिकलित क्रान्तिक अनुपात का मान 3.0598 प्राप्त हुआ जोकि 198 स्वतंत्रता अंश एवं .01 सार्थकता स्तर पर टी. सारणी के मान 2.60 से अधिक है। अतः मध्यमानों के आधार पर परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

अतः सांख्यकीय विश्लेषण के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर है। माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियो में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक पाया गया। माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता कला संकाय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।
2. अशासकीय सहायता प्राप्त एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया। अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

शोध अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट है कि छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता छात्रों की अपेक्षा अधिक है। अधिकतर विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, स्वचालित वाहन, जनसंख्या वृद्धि आदि हैं। अधिकांश विद्यार्थी पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए वृक्षारोपण, जल प्रबंधन एवं प्रकृति की देखभाल के पक्षधर पाये गए। अधिकांश छात्राएँ नशीले पदाथों के प्रतिबन्ध के पक्ष में पायीं गयीं। उनका मानना था कि नशीले पदार्थ स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होते हैं। छात्राएँ यह मानती हैं कि प्रदूषण मुक्त ईंधन का अधिक से अधिक उपयोग हो।

पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने हेतु सुझाव–

इस शोध अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने से उनमें पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होगा। विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. विद्यार्थियों को वृक्षारोपण का महत्त्व समझाना चाहिए एवं वृक्षारोपण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरण से संबंधित रोचक साहित्य उपलब्ध कराया जाए जिससे विद्यार्थियों में पर्यावरण से संबंधित विषयों के अध्ययन में रुचि विकसित हो सके।
3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग के बारे में जानकारी देनी चाहिए।
4. अध्यापक अपने विद्यार्थियों में मानव प्रेम एवं प्रकृति प्रेम की भावना विकसित करने का प्रयास करें।
5. माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरण से संबंधित संगोष्ठी, पर्यावरण संबंधी प्रश्न मंच, वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं पर्यावरण संबंधी कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
6. विद्यार्थियों को प्राकृतिक भ्रमण कराया जाना चाहिए।
7. विद्यार्थियों को पर्यावरण दूत बनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है।

इस प्रकार यह शोध पत्र माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता की व्याख्या करता है। इस शोध में औरैया जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता मापने हेतु डॉ. प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरुकता मापनी का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता में अन्तर है। उपर्युक्त तरीकों को अपनाकर छात्रों की पर्यावरण जागरुकता में वृद्धि कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. **अग्रवाल, सुनील कुमार (2017).** राजस्थान के भावी शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. रिमार्किंग एन एनालाइजेशन वॉल्यूम–2 (5) अगस्त–2017.
2. **ओझा,एस. के. (2019).** पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण. बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज।
3. **कुमार, अमित (2006).** पर्यावरण अध्ययन. विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. **कुशवाहा, एस. एस. एवं देवी, ममता (2015).** उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल सिर्च एण्ड टैक्नोलोजी, वॉल्यूम–5 (2) जुलाई (2015).
5. **गुप्ता, एस. पी. (2020).** अनुसंधान संदर्शिका. शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
6. **कुमार, गौरव एवं पंवार, मोहन सिंह (2022).** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन. ज्योतिर्वेद प्रस्थानम्. वॉल्यूम 10 (6) जनवरी–फरवरी 2022 पेज नं. 303–306।
7. **मस्तैनया, भुवनेश्वर सिंह (2021).** भावी शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ति का भारतीय संस्कृति, मूल्यों एवं आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन. पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी. http://hdl.handle.net /10603/378244

8. **शर्मा, नीतू (2018)**. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय अभिवृत्तीय एवं पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन. ट.टी.एम. ए. ट्रैक्स, इण्टनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिस्प्लीनरी स्टडीज, वॉल्यूम–1 (38) जनवरी 2018.
9. **शर्मा, शम्भू कुमार (2018)**. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन. इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्स एवं सोशल साइंस. वॉल्यूम 5 (1) जनवरी 2018 पेज नं. 713–718.
10. **श्रीवास्तव, निशा (2015).** उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन. इण्टरनेशनल लेवल मल्टीडिस्प्लीनरी रिसर्च जर्नल वॉल्यूम–4 (7) अप्रैल 2015.